‘कवितावली’ में महामारी का परिदृश्य

संतोष कुमार बघेल
सहायक प्राध्यापक
आई.टी.एस.महाविद्यालय,
गरियाबंद, बिलासपुर (छ.ग.)

शोध का सार –
कोरोना ने पूरी दुनिया में ऐसी तबाही मचायी है कि लोगों का जीवन न सिर्फ अस्त–व्यस्त हुआ है बल्कि पूरी दुनिया में लाखों-करोड़ों लोगों को अपनी जान भी गवानी पड़ी है। ऐसी स्थिति आज और आने वाले कल के लिए एक सबक है। लेकिन भारतीय संदर्भ में बात की जाये तो वर्तमान समय में शासन और प्रशासन के द्वारा कोरोना से बचाव के लिए विभिन्न माध्यमों से जागरूकता दी जा रही है और कोरोना से बचने के लिए बार-बार सावधान करना और चेतावनी देने के बावजूद, अधिकांश जनता इस चेतावनी को दरकिनार कर अपनी मनमानी कर रहा है, जो घातक है। ऐसी स्थिति में कोरोना जैसी महामारी ने धीरे-धीरे अपना विकराल रूप धारण कर तबाही मचा रखी है जो आगे आने वाले संकट की ओर इशारा कर रहा है। जिस तेज गति के साथ भारतीय समाज की संरचना बदलती जा रही है, उससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आने वाला समय ग्लोबल सुविधाओं के साथ विभिन्न संकटों और चुनौतियों से भरा होगा।

बीज शब्द –
महामारी, निर्वहन, पंचकोसी, लोकमर्यादा, मानवीयता।

‘महामारी’ शब्द 2020 में कुछ इस तरह हमारे जहन में उतरा जो जीवन के समाप्ति के साथ ही खत्म हो सकेगा। जिन दृश्यों को कभी टीवी स्क्रीन पर देखा करते थे, वैसे दृश्य साक्षात् देखकर दिल दहलता रहा। ऐसा नहीं है कि महामारी हमारे पहली बार आयी है। प्राचीन काल से लेकर अब तक प्लेग, हैजा, स्वाईन फ्लू, कोरोना जैसी कई महामारी के प्रकोप का सामना हम कर चुके हैं। इस तरह की महामारियां का आना सहज और प्राकृतिक देन नहीं कही जा सकती है, बल्कि ये मानव के द्वारा निर्मित हैं। आवश्यकता से अधिक प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना और अमानवीय कृत्य इसका प्रमुख कारण बनता जा रहा है, जिससे महामारी जैसी स्थितियां निर्मित होती हैं। यदि हम यह कहें कि ये सब हमारे सभ्य समाज की ही देन है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस बात को जितनी जल्दी समझ ली जाये उतना ही अच्छा होगा। किंतु दुखद पहलू यह है कि समाज के अंदर अब भी इस ओर जिस गति के साथ चेतना आने की जरूरत है, वह नहीं के बतौर है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी? कोई भी महामारी हमारे बीच किन कारणों से दस्तक देती है या पैदा होती है, उसके मूल कारणों को जानने और समझने की सख्त आवश्यकता है और इसके बचाव के उपाय को समय रहते अपना लेना अति आवश्यक है।

प्राचीन काल से ही इस तरह की समस्यायें हमारे बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रही है। इन विषयों पर प्राचीन काल से ही समाज सापेक्ष दशा और दिशा पर साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका हमेशा से रही है, जो आज भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। इसलिये साहित्य को समाज का पथ प्रदर्शक कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा रचित ‘रामचरितमानस के माध्यम से भारतीय जीवन को जिस प्रकार से चित्रित किया गया है, वह समसामयिक प्रतीत होता है। इसलिए आज भी समाज की आत्मा राम काव्य को कह सकते हैं।

बहरहाल यहां 'रामायण' की बात न करके उनके द्वारा रचित 'कवितावली' के उत्तरकांड में किये गये महामारी का उल्लेख कर रहा हूँ। 'कवितावली' के माध्यम से समाज के अंदर फैल रही भौतिक और दैहिक सुख को प्राप्त करने के लिए जो आराजकता आम जन मानस के अंदर पैदा हो रही है, उस पर गंभीरता से प्रकाश डाला गया है। उन कारणों की वजह से कैसे महामारी जैसी स्थितियां हमारे बीच पैदा होती है, इस पर चिंतन किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखी गयी 'कवितावली' के उत्तरकांड में महामारी के संदर्भ में दिये गये उपदेश बेहद प्रासंगिक हैं, जिसे बिन्दुवार समझने की कोशिश हुई है।

कर्म (काम)-

गीता में कहा गया है 'जैसा कर्म करोगे वैसा फल पाओगे'। कर्म का हम सीधे और सामान्य अर्थ को लेते हैं अर्थात जैसा काम करेंगे, वैसा ही फल अधिकांशत: मिलता है। किन्तु धार्मिक व्याख्या को लेकर अलग-अलग अर्थ गढ़े जा सकते हैं। मोटे तौर पर वर्तमान जीवन शैली के संदर्भ में ही देखें सकते हैं। जहाँ आज का समाज अपनी निजी हित, स्वार्थ और भौतिक सुख-सुविधाओं के आगे अपने मूलभूत कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पाते हैं। तुलसीदास कहते हैं कि जिस काशी (संसार) की रचना, मनुष्य जाति के हित के लिए किया गया था, उस उद्देश्य को मनुष्य भूल गया है। इस वजह से समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। तुलसीदास लिखते हैं कि-

"पंचकोस पुण्य को, स्वारथ परारथ को,
जानि आप आपने सुपास बास दियो है।
नीच नरनारि न सँभरि सकें आदर,
लहत फल कारद बिचारि जो न कियो है।
बारी बारानसी बिनु कहे चक्रपानि चक्र,
मानि हित हानि सो मुरारी मन मियो है।
रोष में भरोसा एक, आसुतोष कहि जात,
बिकल बिलोकी लोक कालकुट पियो"1

पंचकोसी की भूमि पुण्यमय है। स्वार्थ और परमार्थ कार्य के लिए उत्तम है। इसलिए काशी में लोगों को बसाया गया था। परन्तु ये लोग नीच प्रकृति के कारण इस आदर को नहीं सँभाल सकें। मोह और अभिमान वश सुकर्म त्याग कर कुकर्म की ओर अग्रसर होने लगे और करने भी लगे। इसलिए काशी में महामारी यहाँ के निवासियों के कर्मों का फल है। जिनके कर्म अच्छे नहीं होते हैं, उनका सहयोग ईश्वर भी नहीं करता है। बल्कि उन्हें दंड देते हैं। अर्थात् भगवान शिव ने काशी के वासियों के कुकर्मों से नाराज होकर उन्हें दण्ड स्वरूप काशी में महामारी फैलायी है। तुलसीदास जी यह कहना चाहते है कि भारतीय समाज को ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे लोगों का कल्याण हो, समाज का कल्याण हो। लेकिन भारतीय समाज में ऐसा चरितार्थ कम ही देखने को मिलता है। यदि लोगों का कर्म ऐसा ही रहा तो भयानक विनाश की ओर इशारा है।

दीन और दुखी- हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या गरीबी है, जो किसी महामारी से कम नहीं है। जब तक गरीबी इस संसार में व्याप्त रहेगी, तब तक इस संसार से दीन-दुखी लोगों की समस्या का हल नहीं हो सकता है। इसलिये यह आवश्यक है कि भुखमरी जैसी समस्याओं से निपटा जाये। नहीं तो महामारी जैसी समस्याओं से हम घिरे रहने को बाध्य हो जायेंगे। लेखक ने निम्न पंक्तियों के माध्यम से दीन और दुखी की समस्या को समझते हुए, उसके उपाय की ओर ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि महामारी से लोग बाद में मरेंगे, गरीबी और भुखमरी से पहले मर जायेंगे।

"रचत बिरंचि, हरि पालत, हरत हर,
तेरे ही प्रसाद जग, अगजग- पालिके।
तोहि में विकास, बिस्व तोही में बिलास सब,
दीजै अवलंब जगदंब द बिलंब कीजै,
करूना-तरंगिनि कृपा-तरंग मालिके।
रोष महामारी, परितोष महतारी दुनी,
देखिए दुखारी मनि-मानस-मरालिके"2

समस्त संसार के रचना करने वाले ब्रह्मा हैं, विष्णु पालन करते हैं और शिवजी संहार करते हैं। हिमालय की पुत्री पार्वती जी से सारे सृष्टि उत्पन्न होती है। हे करूणामयी जगदम्बा, सबको सहारा दीजिये। इन सारे देवी-देवताओं से लेखक विनती करते हैं कि संसार में जितनी दीन और दुखी लोग हैं, उनकी समस्याओं का हल करें क्योंकि जब तक संसार में दीन-दुखी लोग रहेंगे, तब तक इस समस्या का हल निकाल पाना कठिन है। दीन और दुखी की समस्या किसी महामारी से कम नहीं है। यदि यही स्थिति बनी रहेगी, तो यह और भी भयावह महामारी का रूप ले सकती है।

अनीति-

जैसे-जैसे स्वहित की भावना लोगों के अंदर आने लगी, लोग दैहिक, दैविक, भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने के लिए अपने मूल कर्तव्यों को भूलकर अनीति के कार्यों को करने लगे। यहाँ तक लोग अपराध जैसे कृत्यों को करने से नहीं कतराते हैं। यदि समाज की यही स्थिति बनी रही तो पाप का घड़ा जल्द ही भर जायेगा और समाज का नैतिक पतन होगा, जो किसी महामारी से कम नहीं है। इसलिये काल का चक्र समय-समय पर अपना भयंकर रूप धारण कर लोगों को सचेत करता रहता है। किन्तु समाज की नैतिक अवधारणा बनने के बजाय बिगड़ती जा रही है। पाप के बढ़ते रूप को देखते हुए लेखक लिखते हैं कि-

"लोगन के पाप, कैधों सिद्ध सुर-साप कैधों
काल के प्रताप कासी तिहूँ-ताप तई है।
उँचे, नीचे बीच के, धनिक, रंक, राजा राय
हठनि बजाय, करि डीठि, पीठि दई है।
देवता निहोरे महामारिन्ह सो कर जोरे,
भोरानाथ जानि भोरे अपनी सी ठई है।
करूनानिधान हनुमान बीर बलवान
जसरासि जहाँ तहाँ तैं ही लूटि लई है"3

लोगों के पाप का घड़ा भरता जा रहा है। इस कारण काशी के लोग दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों प्रकार के कष्टों से पीड़ित हैं। ये सभी लोग(धनी, दरिद्र, राजा) हठपूर्वक जान-बूझकर धर्म-कर्म से विमुख हो बैठे हैं। जब सारे लोग अपने धर्म और कर्म से विमुख हो जायेंगे, तो इस जगत में धर्म के रास्ते पर कौन चलेगा? इसलिये सारे देवतागण भी दैहिक, दैविक, भौतिक सुखों में लीन लोगों की कोई मदद नहीं कर पा रहे हैं। जब तक मानव समाज सुख सुविधाओं की ओर भागते रहेंगे, तब तक महामारी जैसी समस्याओं का आना सहज है। इसलिये किसी भी वस्तु या भौतिक सुविधा का प्रयोग एक सीमा तक हो, तो बेहत्तर होगा। अन्यथा मानवीय और प्राकृतिक विपदा का पैदा होना तय है। नीति और अनीति के बीच के फर्क को समझना अत्यंत आवश्यक है। तब कहीं जाकर जिस सतयुग की कल्पना लेखक ने की थी, वह साकार हो सकती है। इस संदर्भ में वे लिखते हैं कि-

"संकर-सहर सर, नरनारि बारिचर,
बिकल सकल महामारी माँजा भई है।
उछरत उतरात हहरात मरि जात,
भभरि भगात, जल थल मीचु मई है।
देव न दयालु, महिपाल न कृपालु चित,
बानारसी बाढ़ति अनीति नित नई है।
पाहि रघुराज, पाहि कपिराज रामदूत,
रामहु की बिगरी तुहीं सुधारि लई"4

काशी मानो एक तालाब है और यहाँ के जीव-जन्तु इस तालाब के निवासी हैं। इस तालाब में जब पहली बारिश होती है, तो वह अपने साथ कई प्रकार की बीमारियों को लेकर आती है, जिससे महामारी फैलने की संभावना होती है। इस कारण इस तालाब के जीव-जन्तु को महामारी से संक्रमित होने का खतरा होता है। ऐसी स्थिति में कोई मदद करने के लिए आगे नहीं आना चाहता है क्योंकि जिस उद्देश्य के साथ लेखक ने काशी नगरी का निर्माण किया था, यहाँ नित्य नई-नई अनीति बढ़ती ही जा रही है। अनीति के साथ लोगों की समस्यायें भी बढ़ती जाती है। इसलिए महामारी जैसी समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। जब तक नीति और अनीति के तराजु में अनीति का पलड़ा भारी रहेगा, तब तक ऐसे परिवेश में महामारी जैसी समस्यायें बनी रहेगी।

लोभ, मोह, काम, क्रोध- ये चारों अवगुण ने लोगों को इतना अंधा बना दिया है कि इससे आगे उन्होंने सोचना एक प्रकार से बंद कर दिया है। भौतिक सुखों के आगे ये लोग अपने मानवीय कर्तव्यों को भूलते जा रहे हैं। अपने कर्तव्यों से विमुख होकर अनैतिक कार्यों को करना भी महामारी फैलाने का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। इस संदर्भ में तुलसीदास लिखते हैं कि-

"निपट अनेरे, अध औगुन दसेरे, नर
नारि ये घनेरे जगदंब चेरी चेरे हैं।
दारीदी दुखारी देखि भूसुर भिखारी भीरू,
लोभ मोह काम कोह कलिमल घेरे हैं।
लोकरीति राखी राम, साखी बामदेव जान,
जम की बिनति मानि, मातु! कहि मेरे हैं।
महामायी, महेसानि, महिमा की खानि, मोद,
मंगल की रासि, दास कासी वासी तेरे हैं।"5

काशी वासी के जो लोग अन्याय, पाप और अवगुणों से घिरे हुए हैं। इनके आचरण ऐसे हैं कि लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि ने इनको जकड़ लिया है, इससे मुक्ति श्रीराम जी दिलवा सकते हैं। किन्तु जिस उद्देश्य से काशी की स्थापना की गयी थी, उस लोक मर्यादा को यहां के लोगों ने भूला दिया है। इस कारण यहां के लोगों में दरिद्रता समा गयी है। इन लोगों ने इस पुण्य लोक काशी के मूल उद्देश्य को भूलकर नित नये-नये अकृत्यों को जन्म दिया है, जिससे महामारी जैसे रोगों का उत्पन्न होना स्वाभाविक लगता है। इन मानवीय कृत्यों से भगवान नाराज हैं।

लोक मर्यादा-

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि लोग अपने लोक मर्यादा को भूल चुके हैं और ऐसे कृत्यों को करते हैं जिसे नहीं करना चाहिए। इन्हीं कृत्यों के कारण सतयुग की जगह कलयुग ने ले लिया है। आधुनिकता के नाम पर लोग लोक मर्यादा को धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं। आधुनिकता के नाम पर ऐसी संस्कृति का जन्म हो गया है जो विकास के नाम पर अभद्रता को जन्म दे रहा है। प्राचीन मान्यताओं के अच्छे संस्कार को आगे ले जाने की आवश्यकता है। ऐसी परंपरा और संस्कार को आगे बढ़ाना चाहिए।

तुलसी दास जी लिखते हैं कि- रामदूत हनुमान जी से विनती करते हैं कि तुम्हीं रक्षा करो। लक्ष्मण के घायल होने के बाद हनुमान जी ने ही संजीवनी बूटी लाकर जान बचाई थी। वे इस बात को इसलिये कहते हैं कि आज महामारी के दौर में लाखों लोगों की जान महज दवाई की अनुपलब्धता के कारण चली गयी। ऐसी ही संजीवनी बूटी की तालाश कोरोना जैसी महामारी के लिए भी की गयी है। वर्तमान परिदृश्य में भी पिछले एक वर्ष से हनुमान की तलाश है जो संजीवनी बूटी लाकर दे और इस भयंकर महामारी से निजात दिलाये। वे लिखते हैं कि-

"आश्रम बरन कलि- बिबस बिकल भए,
निज निज मरजाव मोटरी सी डार दी।
संकर सदोष महामारि ही तें जनियत
साहिब सदोष दुनी दिन दिन दारदी।
नारि नर आरत पुकारत, मुनै न कोऊ,
काहू देवतनि मिलि मोटी मूठि मार दी।
तुलसी समीत-पाल सुमिरे कृपालु राम,
समय सुकरूना सराहि सनकार दी"6

चारों आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) के लोगों ने कलयुग के कारण व्याकुल होकर अपनी-अपनी लोक मर्यादा के आचरण को भूला दिया है। इसलिये काशीपति क्रोध में है। इस संसार में दिनोंदिन दरिद्रता बढ़ती

ही जा रही है। इस दरिद्रता के आगे लोगों की सोच व्यापक न होकर संकुचित होती जा रही है। इस कारण से जनता के अंदर की मानवीयता, नैतिकता और करूणा खत्म होती जा रही है।

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली का उतरकांड में काशी के उदाहरण से महामारी के संदर्भ में जो प्रसंग दिये हैं वह आज नितांत प्रासंगिक प्रतीत हो रहा है। भले ही वह ईश्वरीय धारणा के आधार पर लिखा गया है। वर्तमान समय में अधिकांश मनुष्य भौतिकवादी जीवन जीने के आदी हो चुके हैं। इन भौतिक सुख-सुविधाओं के अभाव में एक कदम भी चलना, ऐसा प्रतीत होने लगा है, जैसे पहाड़ काटकर रास्ता निकालना। आधुनिक जीवन शैली कुछ हद तक सिनेमाई पर्दे से प्रभावित है, तो कुछ हद तक उच्च वर्ग के लोगों के रहन-सहन से, जो कहीं न कहीं पश्चिमी सभ्यता से भी प्रभावित हो रही है। गांव से लेकर शहर तक के लोग ऐसी ही जीवनशैली को अपनाना चाहते हैं। परिणामस्वरूप अपने आय का निर्धारण संयमित और व्यवस्थित रूप से नहीं कर पाते हैं, जिस कारणवश जीवन बिखर सा जाता है। भारतीय समाज का यह एक अहम् पक्ष यह रहा है।

लोक मर्यादा को लांघना किसी बीमारी से कम नहीं है जो आगे चलकर महामारी का रूप लेने लगता है। महामारी के प्रमुख कारणों को चिन्हित करने की जरूरत है जिससे महामारी की उत्पत्ति होती है। इसलिये महामारी से निपटने के लिए विशेष तौर से साफ-सफाई, स्वच्छ वातावरण, स्वच्छ पानी की सख्त आवश्यकता है। लेकिन आज विकास के नाम पर बढ़ता हुआ प्रदूषण एक प्रमुख कारण है। यदि महामारी जैसे भयंकर प्रकोपों से बचना है तो तुलसीदास के द्वारा दिये गये उपदेशों की ओर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है। अन्यथा जो स्थिति अभी है वह बार-बार आने की पूरी संभावना बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1-भगवानदीन,लाला.गोस्वामी तुलसीदास. (टीका). कवितावली. लखनऊ. पृष्ठ संख्या. 178
2- वहीं, पृष्ठ संख्या- 179
3- वहीं, पृष्ठ संख्या- 180
4- वहीं, पृष्ठ संख्या- 181
5- वहीं, पृष्ठ संख्या- 179
6-वहीं, पृष्ठ संख्या- 183

भारत की जनगणना २०११, जनगणना आयुक्त सी. चंद्रमौली द्वारा राष्ट्र को समर्पित भारत की १५वीं राष्ट्रीय जनगणना है, जो १ मई २०१० को आरम्भ हुई थी। भारत में जनगणना 1872 से की जाती रही है और यह पहली बार है जब बायोमेट्रिक जानकारी एकत्रित की गई। जनगणना को दो चरणों में पूरा किया गया। अंतिम जारी प्रतिवेदन के अनुसार, भारत की जनसंख्या २००१-२०११ दशक के दौरान १८,१४,५५,९८६ से बढ़कर १,२१,०8,54,977 हो गई है और, भारत ने जनसंख्या के मामले में अपने दूसरे स्थान को बनाए रखा है। इस दौरान देश की साक्षरता दर भी ६४.८३% से बढ़कर ६९.३% हो गई है।भारतीय संविधान की धारा 246 के अनुसार देश की जनगणना कराने का दायित्व सरकार को सौंपा गया है या संविधान की सातवीं अनुसूची की क्रम संख्या 69 पर अंकित है जनगणना संगठन केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है जिसका उच्चतम अधिकारी भारत का महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त होता है यह देश भर में जनगणना संबंधी कार्यों को निर्देशित करता है तथा जनगणना के आंकड़ों को जारी करता है वर्तमान में भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त डॉक्टर शिव चंद्र मौली है इन से पूर्व इस पद पर देवेंद्र कुमार सिकरी (2004 से 2009)तक थे 2011 ईस्वी की जनगणना यानी 15 वी जनगणना स्वतंत्र भारत की सातवीं जनगणना की शुरुआत महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त के द्वारा 1 अप्रैल 2010 इसमें से हुई है सितंबर 2010 ईस्वी को केंद्रीय मंत्रिमंडल जाति आधारित जनगणना (1931 ईस्वी के बाद पहली बार) की स्वीकृति प्रदान की जो अलग से जून 2011 से सितंबर 2011 ईस्वी के बीच संपन्न हुई थी जनगणना 2011 ईसवी का शुभंकर प्रगणक शिक्षिका थी था इस का आदर्श वाक्य- हमारी जनगणना हमारा भविष्य।